एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 02 (मार्च-अप्रैल, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

जीवन्ती/डोडी: एक दिव्य औषधि (खेती पद्धति एवं उपयोग)

(*विरेन्द्र सिंह शेखावत, पटेल निकिता एवं रमेश कुमार)
पादप प्रजनन व आनुवंशिकी विभाग, जूनागढ़ कृषि युनिवर्सिटी, जूनागढ़
*vsponkh@gmail.com

चरक संहिता में उल्लेखित जीवन्ती, जिसे डोडी, खरखोडी या कॉर्क स्वेल्लो वोर्ट भी कहा जाता है, एस्क्लीपिएडेसी कुल की बहुत ही महत्वपूर्ण औषधीय वनस्पति है । इसका वैज्ञानिक नाम लेप्टीडीनिया रेटिकुलाटा है, जो कि इसमें उपस्थित लेप्टीडीन नामक औषधीय तत्त्व के आधार पर लिया गया है ।

जीवन्ती सुन्दर, क्षीरयुक्त लतासदृश वनस्पति है जिसके सभी भागों यथा जड़ों, पत्तियां, फल, फूल इत्यादि का विभिन्न प्रकार के रोगों में औषधि के रूप में प्रयोग किया जाता है । इस लता का तना सफ़ेद रंग का अनेक शाखाओं तथा कोमल रोमों से युक्त होता है । इसकी पत्तियां सरल, विपरीत अवस्थित,सिरे पर नुकीली, हृदय के आकार की होती हैं जो कि पृष्ठ भाग में रोमों से आच्छादित होती है । पत्तियों का आकार 5-7.5 सेमी. लम्बा तथा 3.5-5.5 सेमी. चौड़ा होता है । इसके फूल हरिमा लिए हुए पीले/सफ़ेद रंग के तथा अम्बेल (नाभि) प्रकार के ससीमाक्षी पुष्पक्रम में नियोजित होते हैं । इसकी फलियाँ बेलनाकार, 6-8 सेमी. लम्बी, 1-2 सेमी. व्यास की, सिरे पर नुकीली तथा पकने पर सफ़ेद रंग की होती है, जिनमें लम्बे-लम्बे रोमों वाले बीज भरे हुए होते हैं । ये बीज फली के फटने पर बाहर आ जाते हैं तथा रोमों से युक्त होने के कारण वायु द्वारा विभिन्न जगहों यथा झाड़ियों, वृक्षों इत्यादि तक प्राकृतिक रूप से प्रसारित हो जाते हैं ।

जलवायु व मृदा :- जीवन्ती गर्म उष्ण या उपोष्ण जलवायु में तथा लगभग सभी प्रकार की मृदा में सरलता से उगाई जा सकती है, परन्तु रेतीली तथा अच्छे जल-निकास वाली मृदा इसके लिए सर्वाधिक उपयुक्त है ।

प्रवर्धन :- जीवन्ती का प्रवर्धन दो प्रकार से किया जा सकता है : बीज द्वारा तथा कलम/कटिंग द्वारा

बीज द्वारा :- बीज द्वारा प्रवर्धन करने के लिए सर्वप्रथम क्यारा तैयार कर क्यारे में गोबर की खाद, मिट्टी इत्यादि का मिश्रण भर दें । तत्पश्चात पकी हुई फलियों में से बीज निकालकर, बीजों को क्यारे में डालकर ऊपर से पत्तियों व गोबर युक्त खाद की पतली परत से बीजों को ढक दें, ध्यान रखें कि बीज ज्यादा गहरा न जाए। इसके बाद नियमित अन्तराल पर क्यारे की सिंचाई करते रहें । बीज द्वारा बुवाई करने में यह विशेष ध्यान रखें कि पकी हुई व फटी हुई फलियों से बीज निकलने के पश्चात दो से तीन सप्ताह के अन्दर ही उनकी बुवाई कर दें जिससे अधिक से अधिक अंकुरण प्रतिशतता प्राप्त हो ।

कटिंग/कलम द्वारा :- कलम द्वारा प्रवर्धन के लिए फरवरी-मार्च महीने में नर्सरी तैयार की जाती है । लता में फूल आने से पहले 12 से 15 सेमी. लम्बी कलम जिसमे दो या तीन गांठे हों, प्राप्त कर लेते हैं । तत्पश्चात इन कलमों को सीधे ही मिट्टी व खाद के मिश्रण से भरी हुई पोलीथिन बेग में रोप देते हैं । कलमों

को पोलिथिन बेग में इस प्रकार रोपें कि कलम का निचला 5 सेमी. जितना लम्बा, एक गाँठ युक्त भाग पोलीथिन बेग की मिट्टी के अन्दर हो तथा कलम का दूसरा गाँठ वाला भाग मिट्टी से कम से कम 5 सेमी. ऊपर हो। इसके पश्चात कलम के सबसे ऊपर वाले भाग में धारदार चाकू से तिरछा चीरा लगाकर उसके ऊपर खाद व मिट्टी का लेप कर दें। इसके पश्चात प्रतिदिन पॉलिथीन बेग की सिंचाई करते रहें। लगभग एक मास पश्चात कलमों में फूट आनी शुरू हो जाती है तथा लगभग तीन माह के पश्चात कलमें खेत में बनाए गड्ढ़ों में रोपणी के लिए तैयार हो जाती हैं।

बुवाई :- पॉलिथीन बेग में तैयार कलम मई-जून माह अथवा वर्षाऋतु के आगमन के साथ खेत में रोपी जा सकती हैं। बुवाई के लिए सर्वप्रथम 45×45×45 सेमी माप के गड्ढ़े खोद लें। गड्ढ़ों के बीच की दूरी पंक्ति से पंक्ति 2 मीटर तथा पौधे से पौधे 1 मीटर रखें। इसके पश्चात गड्ढ़ों में गोबर की खाद व मिट्टी 1:1 के अनुपात में भर दें। आवश्यक हो तो दीमक से बचाव के लिए क्लोरपायरीफोस नामक दवाई भी मिट्टी के साथ मिला सकते हैं। यह सभी कार्य वर्षा ऋतु से पहले ही पूर्ण कर लें। जैसे ही प्रथम वर्षा का आगमन हो, पॉलिथीन बेग में तैयार कलमों को इन गड्ढ़ों में रोप दें। इस प्रकार एक हेक्टेयर में लगभग ४००० से ५००० कलमों का रोपण किया जा सकता है।
चूँकि जीवन्ती/डोडी एक लता (बेल) सदृश वनस्पति है, अतः इसे सहारा देने के लिए मंडप तैयार करके उस पर बेल को चढ़ाना अधिक उपयुक्त है। इसके अलावा जीवन्ती की बेल के पास में गड्ढ़ों के बीच रिक्त पड़े भाग में दूसरी वनस्पति/फसल भी उगा सकते हैं।

अन्तर-शस्य क्रिया :- नियमित अन्तराल पर खरपतवारों को निकालना व मिट्टी को भुरभुरी बनाना आवश्यक है, जिससे इसे पर्याप्त मात्रा में जल, वायु व पोषण प्राप्त हो सके।

सिंचाई :- शुरूआती 2-3 महीनों में तीन से चार दिन के अंतराल पर, तत्पश्चात 10-15 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करें।
कटाई :- जीवन्ती का पौधा 10-12 वर्ष तक जीवित रहता है। कटाई प्रायः वर्ष में दो बार की जाती है। पहली कटाई छः महीने बाद की जा सकती है। कटाई के लिए जनवरी और फरवरी के बीच का समय सर्वाधिक अनुकूल है।

औषधीय उपयोग :-

- जीवन्ती स्वाद से मधुर, लघु एवं स्निग्ध गुणों वाली शीतकारक औषधि है, जो तीनों प्रकार के दोषों यथा वात, पित्त एवं कफ के निवारण में उपयोगी है।
- जीवन्ती में लेप्टाडीन नामक तत्त्व मुख्य रूप से होने के कारण आँखों के रोगों के उपचार में इसका उपयोग महत्वपूर्ण है।
- क्षयजन्य विकार, शोष, तपेदिक आदि रोगों में इसे दूध के साथ प्रयोग करवाया जाता है। जीवन्ती तासीर में ठंडी एवं रस में मधुर होती है। इसी कारण यह मूत्रल औषधि है अर्थात मूत्र को जल्दी लगाती है। यह मूत्रकृच्छ, मूत्रदाह और पुयमेह में प्रयुक्त की जाती है।
- बुखार में जीवन्ती की जड़ का काढ़ा बनाकर उसमें घी मिलाकर सेवन करने से बुखार के कारण होने वाली तपन से छुटकारा मिलता है।
- जीवन्ती के पांच से दस पत्तों को घी में पकाकर नित्य सेवन करने से रतौंधी रोग में लाभ मिलता है।
- जीवन्ती की पत्तियों को पीसकर घाव पर लेप करने से घाव जल्दी भर जाता है।
- जीवन्ती के कच्चे तने व फलियों का शाक बनाकर सेवन करने से आँखों की दृश्यक्षमता में वृद्धि होती है।
- दस्त या अतिसार में जीवन्ती की सब्जी को देसी घी में भुनकर दही और अनार के साथ खाने से लाभ मिलता है।
- सिरदर्द होने पर जीवन्ती की पत्तियों को पीसकर माथे पर लगाने से सिरदर्द दूर होता है।